॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल 2023 वर्ष 27, अंक 04 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

श्रद्धांजलि

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट को बड़ी क्षति

श्री सुनील मानकटाला

01 सितम्बर 1956– 04 मार्च 2023

श्री सुनील मानकटाला जी टंकारा ट्रस्ट के सहयोगी ट्रस्टी थे। श्री सुनील मानकटाला जी की पवित्र आत्मा ने 04-03-2023 को उनके रूस प्रवास के समय अकस्मात् हृदयगति रूक जाने के कारण ईश्वरीय व्यवस्था के अनुकूल देह त्याग कर दिया। आप सपत्नीक वहाँ गए हुए थे। सूचना मिलते ही परिवार के अन्य सदस्य भी वहाँ पहुंच गए। आप स्व. औंकारनाथ जी के सुयोग्य सुपुत्र थे। श्री सुनील जी आर्य समाज सान्ताक्रूज एवं आर्य विद्या सभा मुम्बई के न्यासी थे।

आपके विचार की विद्वता, संस्कार, दूरदर्शिता, कर्मठता, एवं मानवीय मूल्य आपके परिवार में साकार प्रतिबिम्बित हैं। वह मूल्य आपके परिवार की संवेदनशील भागीदारी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। आपकी शिक्षा, कर्तव्यपरायणता, समर्पण, त्याग, निस्वार्थ सेवा और सहृदयता सर्वदा हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

टंकारा ट्रस्ट एवं टंकारा समाचार परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और शोकाकुल परिवार को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

समस्त टंकारा ट्रस्ट एवं टंकारा समाचार परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षमा करना सीखे

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

क्षमा का अर्थ है-गलती, अपराध करने वाले को दण्ड दिए बिना ही छोड़ देना, माफ कर देना, बदला न लेना। पर इसके लिए उस अपराध के परिणाम, प्रभाव, नुकसान, परिस्थिति और व्यक्ति पर विचार करना जरूरी हो जाता है क्योंकि सामाजिक, व्यवहार में अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब कोई व्यक्ति न चाहते हुए भी कोई अपराध, गलती कर बैठता है। वह जानबूझ कर ऐसा नहीं करता, अपितु अपने अधूरे ज्ञान के कारण या पूरी बात का पता न लगने के कारण या दूसरों के ऊपर विश्वास कर लेने से या कई बार अपनी अज्ञानता, अदूरदर्शिता, असावधानी, लापरवाही, आलस्य आदि के कारण गड़बड़ कर बैठता है। अंत में जब परिणाम सामने आता है तो वह व्यक्ति पश्चाताप करता है, कानों को हाथ लगाता है, आगे ऐसा न करने की बार-बार शपथ खाता है। इस प्रकार सच्चे दिल से पछतावा अनुभव करने वालों को माफ कर देना ही उचित होता है। ऐसी स्थिति में ही सामाजिक व्यवहार चलता है। इसी दृष्टि से ही स्मृति शास्त्रों में प्रायश्चित की चर्चा और विधान मिलता है। सामाजिक व्यवहार के कई क्षेत्रों में बड़े-छोटे का सम्बन्ध होता है जैसे कि परिवार में माता-पिता और बच्चे, विद्यालय में शिक्षक तथा शिष्य, कार्यालय या कारखाने आदि में अधिकारी एवं कर्मचारी आदि। ऐसे क्षेत्रों में यदि छोटा कोई अपराध करता है, तो उसको सदा दण्ड देने की जरूरत नहीं होती। अधिकतर माफ करना ही अधिक उचित होता है। और तभी वह व्यवहार चलता है। ऐसी स्थिति में कई बार दण्ड की अपेक्षा क्षमा का अधिक प्रभाव होता है हाँ, उसको यथापेक्षित सावधान कर देना चाहिए।

परिवार और समाज में रहते हुए अनेकों के साथ हम अनेकविध व्यवहार करते हैं। परस्पर के बर्ताव में अनेक बार कोई एक दूसरे से बड़ा होने के कारण या धन, सामाजिक सम्बन्ध आदि के कारण एक दूसरे से इस प्रकार के शब्द कहता है या ऐसा व्यवहार करता है जो सर्वथा अनुचित, असह्य होता है, वह स्थिति या व्यवहार उस समय जैसे कैसे बीत जाता है। दोनों के जीवनों में या स्थितियों में परिवर्तन आ जाता है। यदि पिछले व्यवहारों को स्मरण करके एक दूसरे से बदला लेने की सोचने लगें, तो कम से कम पारिवारिक सम्बन्ध कभी भी स्थिर न हो सकेंगे। यहाँ परस्पर क्षमा के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं रहता। इस ने तब मुझे यह कहा था, ऐसे वर्ता था, ऐसा सोच कर उस से बदला लेने की बात, भावना से कभी गुजारा नहीं चल सकता। कई बार बड़ों से भी गलती हो जाती है, उनके प्रति दण्ड या बदले की भावना जचती नहीं।

क्षमा शब्द का मूल अर्थ है-सहना (क्षमुष् सहने) जैसे कि हर व्यक्ति से यदा-कदा अनेक प्रकार के नुकसान होते हैं, पर कोई भी अपने आप को हर समय दण्ड नहीं देता, वह सब सहा जाता है। ऐसे ही जिस-जिस के साथ जितना-जितना अपनापन होता है, हम उनकी गलतियों को उतना-उतना सह लेते हैं। कई बार हानि के अनुपात से अपनी शक्ति के अनुरूप सहते हैं।

हाँ, विशेष सामाजिक परिस्थितियों में, हानि की अधिकता में या दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव की दृष्टि से या उस अपराधी का जब दूसरों का उल्टा प्रभाव होता है तब उस अपराधी को क्षमा करना अनुचित होता है, चाहे वह सच्चे दिल से अपनी गलती को अनुभव करता हो। शत्रु या उस द्वारा किए जाने वाले कार्य अथवा युद्ध आदि की स्थिति में माफ करना सर्वथा असंभव होता है, पर ये विशेष अपवाद होते हैं। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में तो क्षमा करना अत्यंत आवश्यक होता है। धरती का एक नाम क्षमा भी है, जैसे वह सब कुछ सहन करती है। ऐसे ही जीवन में व्यक्ति को बहुत कुछ सहने की अपेक्षा होती है। हाँ, जब कोई साधारण ढंग से धूलि में पैर न रखकर अनादर से रखता है, तो धूलि एकदम उसके सिर पर सवार हो जाती है, तब वह क्षमा नहीं करती।

–पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

जन्म ले रहा नव संवत्सर

जन्म नया ले नयी चेतना
जन्म ले रहा नव संवत्सर
पीछे दूर छोड़कर गत को
दौड़ आगे, भावी भास्वर।
लेता वर्ष विराम, परम प्रभु?
हम कृतज्ञ हैं नव तव सम्मुख,
जन्म पुनः ले रहा वर्ष यह
पूर्ण प्रार्थना हो, प्रभु-उन्मुख,
हम सबके हित भी होवे यह
अभिनय जीवन का प्रभात वर?
जन्म नया ले नयी चेतना
जन्म ले रहा नव संवत्सर।

टंकारा समाचार ई-मेल और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र ''टंकारा समाचार'' अब आधुनिक माध्यम से भी उपलब्ध है। माननीय पाठकों द्वारा दिए गए सुझावों एवम् टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा निर्णय लिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा डाक अव्यवस्थित रूप से प्रति माह ना मिलने पर असंतोष प्रकट किया जा रहा था। परन्तु अब आप सभी को टंकारा समाचार मासिक बिना किसी रूकावट के प्राप्त होता रहेगा। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपना सदस्यता संख्या एवम् नाम के साथ अपना ई-मेल अथवा व्हाट्सअप नम्बर भेजने की कृपा करें। उपरोक्त सूचना आप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर भेज कर पंजीकृत करा सकते है जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके। **- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक**

प्रसन्नता का रहस्य

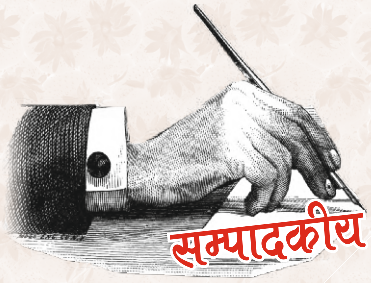

ऐसा अक्सर होता है कि जब हम अपना प्रतिदिन का कार्य पूरी ईमानदारी से करते हैं, उसके क्रियान्वयन में किसी प्रकार की हिचकिचाहट भी नहीं दिखाते, चाहे उसका परिणाम भले ही कुछ भी हो, मगर उससे हमें प्रसन्नता प्राप्त होती है। सन्तोष मिलता है। इसी प्रसंग में कहा गया कि–''मनुष्य को यह आभास होना चाहिए कि उसने अपने कर्तव्य का पालन किया है।'' एक अमेरीकन विद्वान के अनुसार उसने बचपन में ही उद्यम करने की आदत डाल ली थी। परिश्रम करने से ही उसे सबसे अधिक प्रसन्नता प्राप्त होती थी। इस आदत का प्रतिफल भी उसे प्राप्त हुआ। कुछ युवक विश्राम का गलत अर्थ लगाते हैं। वे सोचते हैं कि अपने कार्य से मुंह मोड़ लेना, प्रयत्नों से विमुख होना ही विश्राम है, किन्तु उसे सबसे अधिक विश्राम तब मिलता है, जब वह एक काम को पूरा करके दूसरा काम करने लगता है।

जब पढ़ते लिखते या काम करते समय मस्तिष्क थकान अनुभव करने लगे तो बाहर की खुली हवा और धूप में चले जाइए और अनुभव कीजिए कि आप थकान से छुटकारा पा रहे हैं। शरीर को स्वस्थ और स्फूर्तिदायक बनाने का प्रयत्न कीजिए। इन विचारों और एहसास से आपका मस्तिष्क और स्थिर हो जाएगा। शरीर को स्वस्थ रखने के प्रकृति के प्रयत्न हमेशा चलते रहते हैं। इसका उदाहरण है कि जब हम सोते हैं तब भी हमारे दिल की धड़कनें जारी रहती हैं। हम सदा प्रकृति के निकट रहने का प्रयत्न कर और उसका अनुसरण करें। इसके परिणामस्वरूप हमें सुखद गहरी नींद, पूर्ण पाचन शक्ति और दूसरे दिन के कार्य के लिए पूरी ऊर्जा प्राप्त होती है। मैं समझता हूँ कि श्रम का यही मुख्य पुरस्कार है जो हमें प्राप्त होता है।'' दुनिया में जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं, वे किसी भी क्षेत्र में क्यों न हों, उन्होंने प्रसन्नता को बहुत ही अधिक महत्व दिया। प्रसन्न रहना, हंसते–मुस्कराते रहना भी सफलता का एक रहस्य है। विद्वानों ने अपने अमूल्य विचार और अनुभव आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल खजाने के रूप में दिए हैं।

जैसे ''अच्छे स्वभाव के कारण हमारे लिए काम का सदा वही महत्त्व होना चाहिए जो मछली के लिए जल का होता है। हमें लोगों के मुख से यह सुनकर आश्चर्य होता है कि उन्हें यह काम पसन्द नहीं या वह इसके बदले वह काम करता तो ज्यादा अच्छा होता। हमारे सामने जब भी कोई काम आए हमें उसके विषय में कभी नहीं सोचना चाहिए, बल्कि जी–जान से उसे करने में जुट जाना चाहिए और मस्तिष्क में हमेशा यह रहना चाहिए कि जिस प्रकार रात के बाद दिन का होना या आना निश्चित है, उसी प्रकार मेरे काम का सम्पन्न होना भी निश्चित ही है।

लिंकन ने कहा था–''भगवान भी जन–सामान्य को ही अधिक प्यार करता है, इसीलिए तो उसने जन मानस की संख्या अधिक और दूसरों की कम रखी है। अपनी प्रसन्नता के सभी उपहारों को दूसरों को समर्पित करने से बढ़कर और कौन सा दैवी कार्य हो सकता है। जो इस प्रकार के कार्यों में लगा हुआ है, उससे बढ़कर और कोई धनी नहीं हो सकता। दूसरे लोगों पर भगवान का वरदहस्त रहे, यही स्वर्ग का सबसे बड़ा सुख है।'' जो लोग दूसरों के अंधकारपूर्ण जीवन में अपने प्रयत्नों से सूर्य का प्रकाश पहुँचाते रहे हैं, इस संसार में युगों–युगों तक उनकी स्मृति बनी रहेगी, वक्त की गर्द उन्हें ढक नहीं सकती, वे अमिट रहेंगी।

दूसरों को आनन्द देने से बढ़कर कोई सुख नहीं– दूसरों को आनन्दित करने से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं है। दूसरों को सुख देकर मनुष्य को जिस आन्तरिक आनन्द की अनुभूति होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

''धन से मनुष्य को कभी आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती, न ही आज तक हुई है, यह हमें हमेशा स्मरण रहना चाहिए, हमारे लिए यही आनन्द की बात होनी चाहिए।

इसी सम्बन्ध में फ्रेंकलिन ने भी कहा है– **''धन ने आज तक किसी को भी प्रसन्नता प्रदान नहीं की क्योंकि आनन्द प्रदान करना धन का स्वभाव ही नहीं है।''**

सच्चा सुख और सच्चा आनन्द तो पर–उपकार अर्थात् परोपकार से ही प्राप्त होता है। जिन्होंने परोपकार किया है, उनका जीवन सुखी रहा है। वास्तव में सच्चा सुख उन्होंने ही पाया है। धन से सुख की कामना करने वाले स्वयं को भ्रमित किए हुए हैं, वे स्वयं को धोखा देते हैं। इस संदर्भ में हम प्रसिद्ध कवयित्री जीन एंग्लो का उदाहरण ले सकते हैं। उन्हें अपनी पुस्तकों से जो भी आय होती थी, वे उसे दान कर दिया करती थी। उन्होंने एक कॉपीराइट भोज निर्धारित किया हुआ था। उनके निवास के समीप के जो अस्पताल होते थे, वहाँ से जो निर्धन रोगी घर जाने वाले होते थे, उन्हें वे सप्ताह में तीन बार इस भोज पर आमंत्रित करती थी। इससे उन्हें अत्यधिक खुशी मिलती थी। आत्मसंतोष प्राप्त होता था। आत्मिक शान्ति मिलती थी।

इसी प्रकार जो –रसिकिन एक ब्रिटेन के राजनैतिक को जब उत्तराधिकार में रकम मिली तो उसने उस धन को अच्छे कार्यों में लगाया। जो छात्र–छात्राएँ धनाभाव के कारण अपनी पढ़ाई जारी रखने की स्थिति में नहीं थे, उसने सहायता करके उनकी पढ़ाई जारी रखने में मदद की। कामकाजी महिलाओं व पुरुषों के लिए उसने आदर्श आवास की व्यवस्था की। लंदन के बाहर की सुखी पड़ी भूमि को उसने खेती योग्य बनाने की दिशा में कार्य करवाया, फिर ऐसे लोगों को उसने उस भूमि में काम करके ऊपर उठने का अवसर दिया जो स्वयं अपनी दुर्बलताओं के कारण या समाज के क्रुर व्यवहार के कारण पतित हो चुके थे।

निर्धन कलाकारों की सहायता के लिए वह सदा तत्पर रहता था, इस प्रकार उसने नवयुवकों में कला के प्रति आकर्षण और रूचि पैदा की। कई कलाकारों की कृतियाँ खरीदकर उसने उन्हें स्कूलों में टंगवा दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि उसने विरासत में मिले आधे से अधिक धन को इसी प्रकार के कार्यों पर खर्च कर दिया, किन्तु जिस समस्या को सुलझाने का बीड़ा उसने उठाया था, वह बढ़ती जा रही थी– गरीब विद्यार्थियों का तांता लगा ही रहता। कामकाजी व्यक्तियों की समस्याएँ कम अवश्य हुई थी, किन्तु पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। अत: उसने अपने लिए केवल उतनी ही सम्पत्ति रखी, जिससे उसे खर्चे लायक पन्द्रह सौ पौण्ड सालाना प्राप्त होते रहे। बाकी सम्पत्ति बेचकर उसने उसे ऐसे कार्यों में लगा दिया जिससे दूसरों को भला हो। आप समझ सकते हैं कि यह कार्य सैकड़ों यज्ञों से भी अधिक पुण्य का था। इससे उसे कितनी आत्मिक शान्ति मिली होगी। कितनी दुआएँ उसके लिए लोगों ने मांगी होगी। इस प्रकार उसने इस लोक में यश पाया इसीलिए पर उपकार से बड़ा कोई कार्य नहीं। इसलिए प्रसन्नता से जीवन बिताना है तो दूसरों के दु:ख बाटो, **खुद जियो और को भी जीने दो यही तो है जिन्दगी का रास्ता।**

हमेशा कार्यशील रहो, आलस्य को अपने जीवन में मत आने दो। ऐसी आदत डालो कि कभी खाली बैठने का समय ना हो आपका मन और मस्तिष्क कुछ करने की ओर प्रेरित करे। किसी ने खूब लिखा है?

जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह शाम
कि रस्ता कट जायेगा मित्रों के बादल छट जायेगा मित्रों।

आओ प्रण करें कि जीवन में स्वयं की उन्नति करेंगे लेकिन औरों को भी साथ लेकर उठेंगे।

अजय टंकारावाला

श्री सुनील मानकटाला के स्वर्गवास पर प्राप्त शोक संदेश

॥ओ३म्॥

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पं.)
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

Arya Kendriya Sabha, Delhi Rajya (Regd.)
15, Hanuman Road, New Delhi-110001

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की केन्द्रीय संस्था आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण सुप्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी स्व. श्री ओंकारनाथ मानकटाला जी के सुपुत्र श्री सुनील मानकटाला जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हें तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग में दुःखी आर्य परिवारों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करें। उनके इस प्रकार अकस्मात चले जाने निजी परिवार और समाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना अत्यंत कठिन है। गहरी शोक संवेदनाओं के साथ!

– **आर्य सतीश चड्डा**
महामन्त्री आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Web : www.thearyasamaj.org

✡ ओ३म् ✡

२३३६०१५०
२३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली – ११०००१

क्रमांक : 2022-23/180/दिल्ली सभा   दिनांक : 9 मार्च, 2023

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत प्रतिष्ठानों एवं प्रकल्पों के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के पूर्व अधिकारी, सुप्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी स्व. श्री ओंकारनाथ मानकटाला जी के सुपुत्र श्री सुनील मानकटाला जी का दिनांक 4 मार्च, 2023 को हुए अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग में दुःखी आर्य परिवारों को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करें।

अपने पूज्य माता–पिता के पद्चिह्नों पर चलने वाले श्री सुनील मानकटाला जी भी समाज सेवा से जुड़े थे और महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी, आर्यसमाज के प्रतिष्ठा सदस्य एवं अधिकारी थे। उनके इस प्रकार अकस्मात चले जाने निजी परिवार और आर्य समाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना अत्यंत कठिन है। गहरी शोक संवेदनाओं के साथ!

– **विनय आर्य,** महामन्त्री

आवश्यक सूचना

टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई–मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

स्थापित : १९०८
रजिस्टर्ड : १९१४

॥ओ३म्॥

Email : aryasabha@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Arya League)
पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

विश्व की समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के पूर्व अधिकारी सुप्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी स्व. श्री ओंकारनाथ मानकटाला जी के सुपुत्र श्री सुनील मानकआला जी का दिनांक 4 मार्च, 2023 को हुए अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख एवं शोक व्यस्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग में दुःखी आर्य परिवारों को इस दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करें। अपने पूज्य माता–पिता के पद्चिह्नों पर चलने वाले श्री सुनील मानकटाला जी भी समाज सेवा से जुड़े थे और आर्यसमाज के सदस्य एवं अधिकारी थे। उनके इस प्रकार अकस्मात चले जाने निजी परिवार और समाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना अत्यंत कठिन है। गहरी शोक संवेदनाओं के साथ!

– **सुरेश चन्द्र आर्य,** प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ARYA VIDYA MANDIR
GROUP OF INSTITUTIONS

ARYA VIDYA MANDIR SOCIETY
St. Cyril Road, Bandra (West), Mumbai - 400 050 Tel. : 61013900

AVMS/CONDL/10225/23   8th March 2023.

What moves throught us is a silence, a quiet sadness,
a longing for one more day, one more word, one more touch
we may not understand why he left this earth,
or why he left before we were ready to say good-bye,
but little by little,
we begin to remember not just that he died, but that he lived
And that his life gave us memories too beautiful to forget.

All of us at Arya Vidya Mandir Society are very sorry to hear of the sad demise of your beloved husbad and an ever loving father & grandfather.

At times like these words are of little consolation, it is very difficult to come to terms with the loss of our dear ones. They are irreplaceable. Memories keep our loved ones close to us in spirit and thought & always in our heart, today and forever. He has left behind innumerable moments that will live in your heart forever. He was a noble soul. The void left with his passing away would be difficult to fill and he would be missed at home.

We pray that the sadness and grief which you and your family members are undergoing is gently replaced by smiles and pleasant memories. May the comfort of God help you during this difficult time. Please accept our deepest sympathies. May the passage of time heal your grief and May his kind and noble soul rest in peace.

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

महर्षि दयानन्द सरस्वती | जयन्ती

उपकार्यालय : आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 23360059, 23362110, ईमेल : tankarasamachar@gmail.com

अत्यन्त शोकमय सूचना प्राप्त हुई कि भाई सुनील मानकटाला जी अब हमारे बीच नहीं रहे। वर्तमान में उनके रूस यात्रा जाने से दो दिन पूर्व आप टंकारा पधारे थे, जिस दिन आपने टंकारा से प्रस्थान किया उससे अगले दिन ही आपको रूस जाना था। कभी सोचा भी नहीं था कि यह हमारी अन्तिम मुलाकात होगा और उनकी टंकारा में यह अन्तिम उपस्थिति होगी। दिनांक 18.02.2023 को टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के पावन पर्व पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति थी जिसमें आप सपत्नीक सम्मिलित हुए। वहीं से आप सीधा मुम्बई वापस आ गये क्योंकि अगले दिन आपने उस यात्रा पर सपत्नीक जाना था। उनका हमारे बीच में न पूर्ति निकट भविष्य में होना सम्भव नहीं है। आपको आदरणीय श्री ओंकारनाथ जी के स्वर्गवास के उपरान्त टंकारा ट्रस्ट का ट्रस्टी निर्वाचित किया गया था। आप पिछले 5-6 वर्षो से टंकारा ट्रस्ट की गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते थे। उनके द्वारा दिए गए सुझाव एवं सहयोग से टंकारा ट्रस्ट की कई समस्याओं का निवारण बहुत ही सरलता से हुआ। वे अपने पूज्य पिताजी के पद्चिन्हों पर चलते हुए दान देने में सर्वदा उद्यत रहते थे। यज्ञ के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी। यहीं दृश्य 18 फरवरी को देखने को मिला। जब मैंने उन्हें कहा कि आप समय से मुम्बई निकल जाये ताकि समय से मुम्बई पहुंचकर व्यवस्थित हो जाये। तो आपने कहा कि मैं प्रातः का यज्ञ यहीं टंकारा में ही करके जाऊंगा और दोनों पति पत्नी पूर्णाहुति के अवसर पर मुख्य यजमान बनें।

मैं टंकारा ट्रस्ट के सभी ट्रस्टियों विशेषकर पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी, प्रधान, टंकारा ट्रस्ट एवं श्री योगेश मुंजाल, कार्यकारी प्रधान टंकारा ट्रस्ट की ओर से उनके प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें पुनः किसी आर्य परिवार में ही स्थान दे क्योंकि ऐसी पुण्य आत्मा बहुत कम ही होती हैं। मुझे रह रह कर यह विचार आता है कि ऐसे अच्छे लोगों के साथ ही ऐसा क्यों होता है जिसका उत्तर अभी तक मुझे प्राप्त नहीं हुआ है। मेरे मन मस्तिष्क पर गहरा आघात हुआ है। पुनः ऋषि जन्मभूमि टंकारा की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि। **– अजय सहगल, मन्त्री**

॥ ओ३म् ॥

आर्ष कन्या गुरूकुल, दाधिया

जिला–अलवर (राजस्थान)–301401

उपकार्यालय : आर्य समाज मन्दिर, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 दूरभाष : 23362110, 23360059

यह जानकर अत्यनत दुःख हुआ कि आदरणीय श्री सुनील मानकटाला जी का हृदयगति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है। मैं अपनी ओर से एवं आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया की ओर से संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहने करने की शक्ति प्राप्त हो। उन्होंने आर्य समाज के जो समाज सेवा कार्य किय है, वह आर्य समाज के इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होगें। परमपिता परमेश्वर की व्यवस्था के आगे नतमस्तक होना पड़ता है। परमात्मा सबका सहारा है। – मन्त्री

ઋષિજન્મભૂમિ ટંકારા..... ટંકારા ગુરુકુળના બ્રહ્મચારીઓ આર્ય સમાજના પ્રચાર માટે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ છે.
ટંકારાની ધરતી પરથી આર્ય સમાજની સ્થાપના દિવસે શુભેચ્છાઓ

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

पंजीकृत कार्यालय : प्लाट 85/1, मॉडल टाउन, जालन्धर-144 003, पंजीकृत संख्या 18 (1948-49)

प्रशासनिक कार्यालय : मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

संपर्क : 011-23362110, 23360059 दिनांक 10-03-2023

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आदरणीय श्री सुनील मानकटाला जी का हृदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है। मैं अपनी ओर से एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहने करने की शक्ति प्राप्त हो। उन्होंने आर्य समाज के जो समाज सेवा कार्य किये है, वह आर्य समाज के इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होगें। परमपिता परमेश्वर की व्यवस्था के आगे नतमस्तक होना पड़ता है। परमात्मा सबका सहारा है।
– मन्त्री

Phone No.: 011-23503500 ESTD. 1886 Web: www.daveme.net.in
E-mail: info@daveme.net.in

DAV COLLEGE MANAGING COMMITTEE

CHITRA GUPTA ROAD, NEW DELHI-110055

Ref. No.:__________ Dated: __________

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आदरणीय श्री सुनील मानकटाला जी का हृदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया है। मैं अपनी ओर से एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की ओर से संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहने की करने की शक्ति प्राप्त हो। उन्होंने आर्य समाज के जो समाज सेवा कार्य किये है, वह आर्य समाज के इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होगे। परमपिता परमेश्वर की व्यवस्था के आगे नतमस्तक होना पड़ता है। परमात्मा सबका सहारा है। –मन्त्री

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (सकल जगत को आर्य बनाये)

गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

(पब्लिक ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन नं. एफ/52/बड़ोदरा - दिनांक 18-08-1960)

प्रधान : सुरेशचन्द्र बंसीधर आर्य
मो. : 98240 72509

महामंत्री : दिपक जयंतिलाल ठक्कर
मो. : 83206 68125 / 93755 26393

कार्यालय : आर्यसमाज, महर्षि दयानंद मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद-380022, दूरभाष : 079-25454373

उप कार्यालय : आर्यसमाज, खंभालीया गेट के बाहर, जामनगर-361005, मोबाइल : 94296 31661

क्रमांक 31/2022-23 दिनांक 09/03/2023

आपके परिवार के श्री सुनील मानकटाला जी के निधन की खबर से गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों और संलग्न आर्यसमाजे गहरे शोक की अनुभूति करते है। ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अंतगर्त आत्मा का शरीर से संयोग और वियोग होता है। जिसका आरंभ है उसका अंत भी सुनिश्चित है, मृत्यु इस सृष्टि का अटल नियम है इस अटल नियम के सामने हमको नतमस्तक होना ही पड़ता है। आपके परिवार को ये दुःख सहन करने की परमकुपाणु परमात्मा शक्ति प्रदान करे ऐसी प्रार्थना और सद्गत की आत्मा को वेदों की आज्ञा अनुसार कर्मानुसार सद्गति प्रदान करे ऐसी परम कुपाणु परमात्मा से प्रार्थना। **– सुरेशचंद आर्य, प्रधान**

स्व. श्री सुनील मानकटाला की स्मृति शेष

स्व. श्री सुनील मानकटाला की स्मृति शेष

स्व. श्री सुनील मानकटाला की स्मृति शेष

स्व. श्री सुनील मानकटाला की स्मृति शेष

नया वर्ष 1 जनवरी
से नहीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से क्यों मनायें?

❐ कन्हैयालाल आर्य

यूनान मिश्र रोमां सब मिट गये जहाँ से,
कोई बात है कि मिटती हस्ती नहीं हमारी।

यह बात किसी कवि ने कही है तो उस के पीछे उसकी मूल भावना यही थी कि हमारी संस्कृति सबसे पुरानी है। आज विश्व में मुख्यत: तीन संस्कृतियाँ काम कर रही हैं। ईसाई संस्कृति केवल 2012 वर्ष पूर्व की है। मुस्लिम संस्कृति 1400 वर्ष पूर्व की है। इससे पूर्व जो संस्कृति थी वह मूल संस्कृति थी, वह संस्कृति थी वेद की संस्कृति। आज पूरा विश्व वेद को सबसे प्राचीन पुस्तक मानता है। हमारी सभ्यता का स्रोत भी सृष्टि का आदिकालीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। विश्व के सभी इतिहासकार इन मान्यता से सहमत हैं कि ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसी मान्यता के आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ(UNO) ने ऋग्वेद को विश्व सभ्यता की आदि धरोहर स्वीकार कर लिया है। यह वैदिक मान्यताओं की विजय है। वैदिक संस्कृति के अनुसार चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा (पहली तिथि) से नववर्ष का प्रारम्भ होता है। यह नववर्ष किसी न किसी रूप में पूरे भारतवर्ष में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्या है इस दिन का वैज्ञानिक महत्त्व?

यूरोपीय सभ्यता के ग्रेगोरियन कैलेण्डर के अनुसार पहली जनवरी को नववर्ष मनाया जाता है लेकिन विक्रमी सम्वत् के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को नववर्ष का प्रारम्भ माना जाता है चाहे हम प्रतिदिन के व्यवहार में दिन, सप्ताह, मास और वर्ष की गणना में अंग्रेजी तिथियों का प्रयोग करते हैं परन्तु आज भी हम धार्मिक अनुष्ठानों एवं मांगलिक कार्यों में विक्रमी सम्वत् की तिथियों का निर्धारण ही करते हैं।

संसार का प्रत्येक समुदाय अपने यहाँ प्रचलित वर्ष के प्रथम दिन को एक पर्व के रूप मे मनाता है। जिस प्रकार ईस्वी वर्ष के अनुसार प्रथम जनवरी को 'न्यू ईयर डे' या नववर्ष के रूप मे मनाया जाता है उसी प्रकार भारतवासी सृष्टि के आदिकाल से नवसम्वत्सर के पहले दिन को एक पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। भारतीय प्राचीन इतिहास परम्परा में इसको 'सृष्टि सम्वत्सर' कहते हैं। यह मान्यता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी दिन से हुआ था। इसका अभिप्राय हमे यह समझना चाहिये कि इस दिन से सृष्टि व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ था। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी मनुस्मृति विशेषज्ञ के अनुसार ज्योतिष के ग्रन्थ हिमाद्रि में इस इतिहास को बताने वाला एक श्लोक आया है।

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति।

इसका भाव यह है कि सृष्टि की रचना हो चुकी थी अर्थात् सबसे पूर्व परमपिता परमात्मा ने पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का अपनी ईक्षण शक्ति से निर्माण किया तत्पश्चात् वनस्पति जगत का निर्माण किया, फिर कीट पतंग, पशु जगत का निर्माण किया तब चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को ब्रह्मा ने इस मानव जगत का निर्माण किया अर्थात् एक व्यवस्था का प्रारम्भ समाज में हुआ और उसी दिन सूर्य के उदय के साथ काल की गणना प्रारम्भ हुई।

कुछ लोग सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब सतानवें करोड़ उनतालिस लाख उन्नचास हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व मानते हैं परन्तु मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवें करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ तेरह वर्ष पूर्व हुआ परम पिता परमात्मा यह चाहते थे कि जब मानव इस संसार मे आये तब उसके लालन पालन की सुख सुविधाओं की पहले से व्यवस्था हो जिस प्रकर सन्तान के उत्पन्न होने से पूर्व माता के स्तनों में दूध का निर्माण हो जाता है उसी प्रकार वह जगत माता यह चाहती थी कि जब मैं मानवी सृष्टि का निर्माण करूँ तो उससे पहले पृथ्वी, जल, सूर्यादि ग्रह, वनस्पति जगत का निर्माण करूँ तभी मैं मानवी सृष्टि को लाऊँ। तभी यह उचित लगत है कि मानवी सृष्टि का प्रारम्भ एक अरब छयानवे करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ बारह वर्ष पूर्व ही सूर्य उदय के प्रथम दिवस को ही हम सृष्टि सम्वत्सर मानते हैं। तब से भारत के लोग इस दिन को एक उत्सव के रूप में मनाते चले आ रहे हैं। सचमुच वह दिन कितना सुहावना रहा होगा जब इस सृष्टि के व्यवहार का एक व्यवस्था के रूप में प्रारम्भ हुआ होगा।

यह सम्वत्सर (ज्ञान का स्रोत) इस बात का संकेत देता है कि विश्व में भारत की संस्कृति सभ्यता इतिहास सबसे प्राचीन है। काल गणना का इतना पुराना लेखा जोखा किसी देश और समाज में नहीं मिलता। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि विश्व में ज्ञान का उद्भव और विकास सबसे पहले भारत में ही हुआ था क्योंकि बिना ज्ञान के न तो कोई दिन, मास, वर्ष, युग आदि का वर्गीकरण कर सकता है और न ही काल गणना की परम्परा को ही सुरक्षित रखा जा सकता है। हम भारतवासियों के लिए यह गर्व की बात है और गौरव का विषय है कि हम विश्व की सबसे प्राचीन स्मृतियों को संजोये हुए हैं। सबसे प्राचीन तथ्यों को सुरक्षित रखे हुए हैं। यह नव सम्वत्सर विश्व सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। (वसन्त ऋतु से प्रारम्भ) चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा वसन्त ऋतु में आती है। वसन्त का प्रभाव न केवल मनुष्यों बल्कि पेड़-पौधों पर भी देखा जाता है। वास्तविकता यह है कि इस ऋतु में सम्पूर्ण सृष्टि में सुन्दर छटा बिखर जाती है। इस ऋतु में हमें सर्दी से छुटकारा मिल जाता है बल्कि पेड़-पौधों पर हरियाली छा जाती है, पशु पक्षी भी मस्ती में आ कर झूमने लगते हैं। यह आनन्द क्या हम अंग्रेजी नववर्ष की पहली जनवरी को अनुभव कर सकते हैं। यदि नहीं तो क्यों हम उस तिथि से चिपके हुए हैं? नया सम्वत् अर्थात् भारतीय नववर्ष के कारण हमारे मन में नई उमंगों का संचार हो जाता है जो पहली जनवरी को कभी नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त विक्रमी सम्वत् के मासों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदय और अस्त होने के आधार पर रखे गये हैं। यह बात तिथियों पर लागू होती है। वे चन्द्रमा और सूर्य की गति पर आधारित होते हैं। इस प्रकार विक्रमी सम्वत् वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि जब भारत पर शक जाति का शासन प्रारम्भ हो गया तो उसने इस सम्वत्सर प्रथा को समाप्त कर दिया। बाद के वर्षों में सम्राट विक्रमादित्य ने 2068 वर्ष पूर्व इसे फिर से प्रारम्भ किया तब से लेकर आज तक यह तिथि विक्रम सम्वत् के पहले दिन के रूप में मनायी जाती है महाराजा विक्रमादित्य न केवल दानी एवं वीर पुरुष थे बल्कि दीन दुखियों के सहायक एवं देशभक्त थे। उन्होंने जो सम्वत् प्रारम्भ किया वही आज विक्रमी सम्वत के नाम से जाना जाता है। ईरान में इस तिथि को 'नैरोज' अर्थात् नववर्ष के रूप में मनाया जाता है।

आर्यनेता स्व. रामनाथः सहगलः

(शतंवर्षीयोऽयं जन्मोत्सवः)

❑ आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

आर्यनेता 'रामनाथः', ऋषिभक्तः नरोत्तमः।
कर्मयोगी सुवक्ताच, सर्वप्रियः सुशोभते॥

भावार्थ-श्री आर्यनेता 'रामनाथ सहगल' महर्षि दयानन्द सरस्वती के परमभक्त, नरों में श्रेष्ठ, कर्मयोगी, ओजस्वी वक्ता और सब आर्यजनों के प्रिय (इस समारोह में) सुशोभित हो रहे हैं।

महर्षेः जन्मभूमिस्तु, कर्मभूमिः सदा मम।
टंकारा-ट्रस्ट-सचिवः, सर्वजन-संयोजकः॥

भावार्थ- महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मस्थली ही श्री रामनाथ सहगल की सच्ची कर्मभूमि है। जो टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री के रूप में लाखों आर्यजनों को (अनेक कार्यो द्वारा) जोड़ने वाले हैं।

बोधोत्सवः प्रतिवर्ष, आर्याणां च महोत्सवः।
पठनं पाठनं नित्यं, संस्कृत, वेद, रक्षणम्॥

भावार्थ-महर्षि दयानन्द सरस्वती का शिवरात्रि बोधोत्सव प्रतिवर्ष टंकारा में आर्यो के भव्य महोत्सव के रूप में आयोजित होता है। (इस स्थान पर ब्रह्मचारीगण श्रद्धा से गुरुजनों के साथ) प्रतिदिन पठन-पाठन करके संस्कृत और वेद की रक्षा कर रहें हैं।

गोसेवा ननु गोरक्षा, गावो भवन्ति मातरः।
गोदुग्धं गोघृतं चैव, गोभक्तिः दृश्यते सदा॥

भावार्थ-(महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुस्तक 'गोकरूणानिधि' के अनुसार) इस टंकारा में गायों की सेवा और गोमाता की रक्षा हो रही है। गायें, हमारी माता हैं। यहां पर गाय का दूध और घी होता है। गोभक्ति यहां दिखाई देती है।

आर्यवीरदल यस्य, रूचि जाता हि शैशवे।
गुरुकुले रावलेऽत्र, आत्मानन्द-संचालिते॥

भावार्थ- जिस (श्री रामाथ सहगल की) बचपन में आर्यवीर दल में रूचि उत्पन्न हुई। यहाँ स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल रावल में (अनेक कार्यो में भाग लिया था)।

बस्ती-हरफूल-सिंह, दिल्ल्यां सदरबाजारे।
मन्दिर-मार्गे हि नूनं, कर्मव्याप्तिः संदृश्यते॥

भावार्थ-दिल्ली सदरबाजार के निकट आर्यसमाज मन्दिर बस्तीहरफूल सिंह और अनारकली मन्दिरमार्ग में आपके कर्मो की व्यापकता दिखाई देती है।

केन्द्रीय सभायामस्यां, प्रादेशिकसभायां हि।
मन्त्रिपदं समवाप्य, कार्यं तैः नितरां कृतम्॥

भावार्थ-इस केन्द्रीय सभा और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में मन्त्री पद को प्राप्त करके, उन्होंने आर्यसमाज का बहुत काम किया।

सिंहनादः रामनाथः कर्मनिष्ठो धर्मशीलः।
दया-सेवा-समापन्नः, सम्पूर्णायुः आयु पर्यतम्॥

भावार्थ-(आर्य महासम्मेलनों आदि महोत्सवों में) सिंह समान गर्जना करने वाले आर्यनेता श्री रामनाथ सहगल कर्मनिष्ठ, धर्मशील और दया एवं सेवा में जीवन पर्यन्त संलग्न रहे।

- मो. 9871020844

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा

प्रवेश सूचना

ऋषि जन्म भूमि पर गुरुकुल चल रहा हैं।

❑ **कक्षा-6, कक्षा-7, कक्षा-8, कक्षा-9, कक्षा-11** में प्रवेश ले सकते हैं।

❑ **कक्षा-उपदेशक**
इसमें 10वीं कक्षा पास छात्र प्रवेश ले सकते हैं। जिसमें **संस्कार, सिद्धांन्त** आदि का प्रशिक्षण दिया जाता हैं। यह 4 वर्ष का कोर्स हैं।

प्रवेश 15 जून 2023 से 5 जुलाई 2023 तक रहेगा।
यहां **हरियाणा (भिवानी) बोर्ड** एवं **महर्षि दयानन्द युनिवर्सिटी** की परिक्षाएं होगी।
कृप्या सभी पाठयक्रम गुरुकुल पद्धति से ही किया जायेगा।

सम्पर्क करें:
आचार्च रामदेव शास्त्री जी
मो. 9913251448

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)
दूरभाषः 91-9814629410
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना

(सत्रः 2023-2024)

छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष) एवं सातवीं कक्षा में (आयु +10 से -12 वर्ष)
कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र **(मूल्य केवल 100/-)** रूपये भरकर 31.03.2023 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं।
पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 02.04.2023 दिन रविवार को प्रातः 8.00 बजे होगी।

❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सुरेश चन्द्र मुंजाल, प्रधान

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

❒ **डॉ. धर्मवीर सेठी**

यजुर्वेद के 34वें अध्याय की प्रथम छः ऋचाओं में ऋषि ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है-मेरा मन कैसा हो? प्रत्येक ऋचा के अन्तिम शब्द हैं: 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'-तत् (वह) मे (मेरा) मनः (मन) शिव (कल्याणकारी) संकल्प (इरादे वाला) अस्तु (हो) अर्थात् मेरे मन में (चाहे वह जैसा भी हो) सदा कल्याणकारी विचार ही उठें। कितनी उदात्त भावना है।

परन्तु प्रश्न उठता है कि आखिर मन है क्या जिसके सम्बन्ध में कवियों, साहित्यकारों और मनीषियों ने बहुत कुछ लिपिबद्ध किया है और जिससे सम्बन्धित अनेकों मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी प्रसिद्ध हैं।

मन मानव शरीर का दिखाई पड़ने वाला कोई अंग नहीं। बाह्य अंगों को छोड़ शरीर के अन्दर का हृदय (Heart), मस्तिष्क (Brain), गुर्दे (Kidney) और अनेको नाड़ियाँ (Veins) जिन्हें डॉक्टर देख और दिखा सकते हैं, उनमें मन की स्थिति, इस रूप में, कहीं भी नहीं है। या यूँ कहें मन निराकार है। फिर भी मन इतना शक्तिशाली है कि **''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''**। कुछ विद्वानों ने मन को **'अन्तःकरण चतुष्टय'** में से एक माना है।

श्रीमद्‌भगवत्‌गीता में अर्जुन मन को चंचल बताते हुए श्री कृष्ण को कहता है: **चंचलं हि मनः कृष्ण, प्रमाथि बलवद्‌दृढ़म्।**

तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सुदुष्करम्।। गीता-6/34

मन को काबू करना तो वैसे ही कठिन है जैसे वायु को वश में करना। मन ही बन्धन का कारण और मोक्ष का साधन है। मित्र और शत्रु भी मन ही है। उत्थान-पतन, सुख-दुःख सब इसी की देन हैं। मानव को दानव और दानव को मानव भी यही बनाता है। समस्त मानसिक रोगों का कारण भी यह मन ही है। मन की खुराक है विचार। देखा गया है कि मन में प्रायः नकारात्मक विचार ही अधिक उठते हैं या यूँ कहें कि यह पंच विकारों-काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष को अधिक प्रश्न देता है। और सकारात्मक विचार अन्तस् में लाना भी मन पर ही निर्भर करता है।

श्री कृष्ण ने तो अर्जुन की इस शंका (मन की चंचलता) का समाधा करने अथवा उसको रोकने के दो सूत्र बताए हैं। अभ्यास और वैराग्य। भटकते मन को अन्तर्मुखी बनाने के लिए अभ्यास की नितान्त आवश्यकता है-

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।। गीता-6/35

हे अर्जुन! मनुष्य का मन निश्चय ही चंचल है और कठिनाई से काबू में आने वाला है किन्तु अभ्यास और वैराग्य के द्वारा उसे वश में किया जा सकता है। योग दर्शन में पतंजलि ने भी स्पष्ट कहा है **''अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः''** (अभ्यास और वैराग्य से मन का निरोध होता है अर्थात् मन काबू में आ सकता है।) इस सम्बन्ध में एक दोहा अत्यन्त प्रचलित है:

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।।

वैराग्य के सूत्र को स्पष्ट करते हुए श्री कृष्ण ने कहा, मोह अन्ततः दुःख का कारण है। संसार की सच्चाई को जानें कि यहाँ कुछ भी स्थाई नहीं है। यह संसार का सराय है। इसलिए निर्लिप्तता ही मन को भटकने से बचाएगी और वैराग्य ज्ञान से उत्पन्न होता है। सत्संग, स्वाध्याय, साधना, भक्ति-प्रार्थना, सन्तोष आदि उपायों से ही वैराग्य की स्थिति प्राप्त की जा सकती है। इससे कर्त्तव्य-बोध होगा, सत-पथ पर चलने की प्रेरणा मिलेगी। यजुर्वेद 34/1 में मन की गतिशीलता की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि दिन हो या रात, मनुष्य जाग रहा हो अथवा सुप्तावस्था में हो, मन की उड़ान प्रकाश की एक किरण के समान इतनी तीव्र होती है जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। मन को 'वेगवान' संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है। इसकी गति अतुलनीय है। फिर भी इस प्रकार वाला मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो, यही प्रार्थना है।

दूसरी ऋचा में मन के सकारात्मक रूप की चर्चा करते हुए कहा गया है कि जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ, मन को दमन करने वाले बुद्धिमान लोग यज्ञादि साधनों से और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों से इष्ट कर्म करते हैं और जो मन प्रभु की अद्‌भुत रचना प्राणिमात्र के अन्दर (विचार रूप में) स्थित है, वह मेरा मन उत्तम संकल्प करने वाला बने। यहाँ मन को शरीर का एक दृश्य अंग नहीं अपितु: 'The common centre of all the senses' के रूप में देखा गया है।

वेद का ऋषि कभी भी निराश नहीं होता। शायद इसीलिए तीसरे मन्त्र में मन को बुद्धि (Intellect) का उत्पादक और स्मृति (चित्त-Memory) का साधन मान उसे धैर्यवान और प्राणिमात्र में अन्धकार का नाश कर प्रकाश बिखेरने वाला कहा गया है। इतना ही नहीं जिस मन की शक्ति के बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं हो पाता-ऐसा मेरा मन शुद्ध विचार और संकल्प वाला हो, यही प्रार्थना की गई है।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। -यजु.: 34/4

यह अविवादित सत्य है कि मनुष्य का पंचभौतिक शरीर नाशवान है परन्तु वाह रे मन! तू तो सदा अविनाशी है। भूत, वर्तमान, भविष्य की परिकल्पना तू करता है और तेरे ही आदेश से मनुष्य की सभी ज्ञानेन्द्रियाँ मानव-जीवन को संचालित करती हैं-ऐसा मेरा मन यदि उत्तम सोच वाला बन सके तो-'सोने पे सुहागा' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्।।

मन ही मनुष्य के (Bondage) अथवा मोक्ष (Salvation) का कारण होता है यह सर्व विदित है। यदि मन इन्द्रिय-जनित विषयों में आसक्त रहता है तो वह बन्धन का कारण होगा और यदि इसके चक्रव्यूह के बाहर रहेगा तो मोक्ष का कारण बनेगा।

पाँचवें मन्त्र में तो ऋषि ने मन में ही चारों वेदों के ज्ञान-विज्ञान, कर्म और भक्ति का समावेश करते हुए यहाँ तक कह दिया कि जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान, सूत्र (धागे) में मणियों के समान पिरोया गया है, ऐसा मेरा मन वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार का शुद्ध संकल्प लेने वाला हो। ध्यान रहे कि आर्य समाज का तीसरा नियम है 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है (Vedas are the Scriptures of true knowledge)।

इस महत्वपूर्ण विषय से सम्बन्धित यजुर्वेद के 34वें अध्याय के छटे मन्त्र को उद्धत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सकता क्योंकि इसमें एक सटीक उपमा देकर मन की स्थिति का वर्णन किया गया है:

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

यहाँ मन को शरीर रूपी रथ का एक कुशल सारथि और इन्द्रियों को रथ के घोड़े माना गया है। अच्छा सारथि जिस प्रकार लगामों से वेगवान घोड़ों को बलात् हाँक ले जाता है, उस प्रकार जो मन मनुष्यों को इतस्ततः विचार-क्षेत्र में ले जाता है, जो 'हृत्प्रतिष्ठम्' अर्थात् हृदय में स्थित (मन शरीर में कहाँ रह सकता है, थोड़ा संकेत यहाँ दिया गया है) और कभी बूढ़ा न होने वाला और अत्यन्त वेगवान है, वह मेरा मन सर्वप्रकारेण कल्याणकारी संकल्प (इरादे) वाला हो।

मन की चंगाई के बारे में भी एक कहावत प्रसिद्ध है- **'मन चंगा ते कठौती विच गंगा'**- यदि मन पवित्र है तो घर में रखे मटके का पानी भी गंगा के पानी जैसा पवित्र होगा। लेकिन मन कभी-कभी खुराफाती भी बन जाता है जिससे हानि की सम्भावना हो जाती है। महाकवि सूरदास ने तो मन की तुलना पक्षी से ही कर दी। उनकी गोपिका के लिए तो:

मेरो मन अनत कहाँ सचु पावे।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवे॥

उपरोक्त छः मन्त्रों में मन को वायु से भी अति वेगवान, कभी बूढ़ा न होने वाला, एक कुशल सारथि और मानव-शरीर का पूर्णरूपेण स्वामी कहा गया है। मेरी दृष्टि में इन मन्त्रों में मन के सकारात्मक रूप की ही चर्चा की गई है। लेकिन प्रार्थना तो एक ही की जाती है कि मेरे मन से सर्वदा कल्याणकारी विचार ही निस्सृत हों।

ऊपर जिन इन्द्रियों की ओर संकेत किया गया है वे दस हैं- पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। मन इन सभी के मध्य संयोजक और नियामक का काम करता है। इसीलिए मन को उभयात्मक (दोनों प्रकार की) इन्द्रिय भी माना जाता है यद्यपि वह दिखाई नहीं देता।

यह सत्य है कि 'शरीरं व्याधि मन्दिर' अर्थात् मानव-शरीर बीमारियों का घर है परन्तु शरीर से ज्यादा पहले मन को ठीक करने की आवश्यकता है और यदि मन स्वस्थ होगा तो शरीर धीरे-धीरे अपने आप स्वस्थ होने लगेगा क्योंकि A healthy mind live in healthy body.

बस जैसे ही इस स्थिति की प्राप्ति होती है सन्त कबीर का वह दोहा स्मरण हो आता है:

कबिरा मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर॥

आइए! 'शिवसंकल्प' के लिए ही सही, 'मन' को यही आदेश दें कि हे 'मन' तुम 'नम' बन कर नम्रता और नमन के प्रतीक बन जाओ जिससे मनुष्य मात्र का कल्याण हो सके।

तन-मन पर नियंत्रण जिस दिन हो जाएगा।
जीवन तुम्हारा धन्य उस दिन हो जाएगा।

- वरेण्यम्, ए-1055, सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009 (हरियाणा)

वेद ज्योतिः- इन्द्र वयं महाधने इन्द्रमर्भे हवामहे। युजे वृत्रेषु वज्रिणम्॥ (पू. 2/1/4/6), **भावार्थ-** हम सबको योग्य है कि छोटे-छोटे बाह्य और आभ्यन्तर सब युद्धों में, उस परम पिता जगदीश की अपनी सहायता के लिए सदा प्रार्थना करें। वह पापियों के पाप कर्म का फल कष्ट देने के लिए सदा सावधान है। इसलिए हम उस प्रभु की शरण में आकर ही सब विघ्नों को दूर कर सुखी हो सकते हैं अन्यथा कदापि नहीं।

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI ATHA ARYODDESHYA RATNA MALA

Puraan- Puraan are the ancient texts such as Aitareya, Shatapath Braahman etcetera, which were written by the Rishis, Munis and are books of true knowledge. They are also called Puraan, Itihaas, Kalpa, Gaathaa, and Naaraashansee.

(Commentary-There are four Braahman Granthas. 1. Aitareeya, 2. Shatapath. 3. Saam and 4. Gopath).

Upaveda- branches of the Vedas. They are four Upavedas. **1. Ayur-Veda-** the science of medicine and health comes from Rig Veda, **2. Dhanur-**Veda-military science and the science of governance of music, arts comes from Yajur Veda, **3. Gandharva-**Veda-the science of music, arts comes from Saam Veda, and **4. Arth-Veda-** the science of achitecture, and craftmanship comes from Atharva Veda.

Vedaang- secondary branches of the Vedas. There are six Vedaang. **1. Shikshaa-**Sanskrit phonetics and proper pronunciation, **2. Kalp-** rituals and guidelines for appropriate actions 3. Vyaakaran-Sanskrit Grammar, **4. Nirukta/Nighantu-** the etymology of Vaidik words, **5. Chhand-** Vaidik and Laukik Sanskrit meter and prosody, and **6. Jyotish-** astronomy, astrophysics and mathematics are the Aarsh (written by Rishis) and eternal shaastras.

Upaang-are the schools of philosophy, Darshan. Meemaamsaa, Vaisheshik, Nyaay, Yog, Saamkhya, and Vedaant are the six shastras written by the Rishis Munis and are called Upaang.

(Commentary-**1. Meemaamsaa-**Rishi Jaimini-discusses the role of and actions and effort in the creating the universe, **2. Vaisheshik-Rishi Kanaad-**examines the properties of the material elements in the universe, **3. Nyaay Rishi Gautam-**describes how to use logic and proofs to ascertain the truth. **4. Yog**-Rishi Patanjali-focuses on the role of the mind and its limitation in realizing one`s self and the Divine. **5. Saamkhya-**Rishi Kapil-emphasizes how to develop the knowledge to discern between the Divine, soul and Prakriti, the universe, and **6. Vedaant-Rishi Vyass-**establishes the pathway to Divine realization. These Darshanas do not contradict each other, but complement each from different perspectives).

Namaste-This is a universal Vaidik Greetings. It means, "Irespect you."

(Commentary-This greeting is performed by clasping one`s hands and bowing the head slightly with humility. One should add "Ji" after saying Namaste to show respect to the person. If the person`s name is known, Ji is added to the name. For example, Namaste Mata Ji, Namaste Arjun Ji).

Swami Dayanad Saraswati published Aryoddeshya Ratna Maalaa in Aarya Bhaashaa (Hindi) for the benefit of humanity on Wednesday 7, in the Shukla Paksha of Shraavan Month in 1934 (English year 1877) based on the calculation of time since the great kind Vikramaaditya.

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

गौ-दान : महा-दान—उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा
स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

—:निवेदक:—

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

सुनील मानकटाला
कोषाध्यक्ष

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

महर्षि की 200वीं जयंती और 150वां स्थापना दिवस

आर्य समाज को तेजी से आगे बढ़ाने का अवसर -अमित गृह, गृहमंत्री भारत सरकार

आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संयुक्त तत्वावधान में विशेष आयोजन 21 मार्च 2023 को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम मे अपनी अपार सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी का उद्‌बोधन विशेष रूप से प्रेरणा का आधार बना और गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता में पूरा कार्यक्रम ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। इस अवसर पर श्री अमित शाह जी ने आर्य समाज की यज्ञ वेदी पर विराजमान होकर अपने कर कमलों से आहुति दी महर्षि दयानंद सरस्वती के महान व्यक्तिव, आर्य समाज के सेवा कार्य और महर्षि के उपकारों को स्मरण करते हुए उन्होंने आर्य समाज को आगे बढ़ाने का यह विशेष अवसर बताया और नई ऊर्जा के साथ आर्य समाज आगे बढे, यह आह्वान भी किया। सभा द्वारा संचालित आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने महर्षि दयानंद की महिमा का गुणगान करते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आर्य वीर दल के वीरों ने आर्य समाज के सेवा भावी इतिहास को आधार बनाकर सुंदर प्रस्तुति दी तथा वर्तमान के ज्वलंत मुद्दों की ओर उपस्थित जनसमूह का ध्यान आकृष्ट करते हुए रिश्ते बचाइए, जातिवाद, ऊंच नीच का भेदभाव मिटाइए, गले लगाइए, प्राकृतिक खेती को अपनाइए, समाज को नशामुक्त बनाइए, यौवन बचाइए आदि विषयों पर रोचक और प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उपस्थित आर्य जनों ने बच्चों का उत्साह वर्धान किया।

श्री अमित शाह जी और आचार्य देवव्रत जी का मंच पर अभिनंदन करने वाले आर्य नेताओं में श्री धार्मपाल आर्य जी, श्री पूनम सूरी जी, श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री सुरेंद्र कुमार रैली जी, श्री योगेश मुंजाल जी, डॉ अशोक कुमार चौहान जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री विकास आर्य जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री पूनम सूरी जी, श्री अशोक चौहान जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी इत्यादि महानुभावों को भी स्मृति चिन्ह एवं भेंट देकर सम्मानित किया गया। सर्वश्री गंगा प्रसाद जी, स्वामी प्रवणानन्द सरस्वती जी, सुरेन्द्र कुमार रैली जी, प्रकाश आर्य जी, राधाकृष्ण आर्य जी, सतीश चड्डा जी, विद्या मित्र ठुकराल जी, राकेश ग्रोवर जी, विकास आर्य जी चेन्नई इत्यादि महानुभाव मंच पर उपस्थित थे। इसके उपरांत विनय आर्य जी द्वारा आर्य समाज की ओर से कुछ विशेष प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए।

(1) प्रदूषण मुक्त वातावरण एवं आत्मनिर्भर भारत की संरचना को मूर्त रूप देने के लिए आर्य समाज की समस्त इकाई अगले दो वर्षों में अपनी ऊर्जा खपत का न्यूनतम 50 प्रतिशत सौर उर्जा पर परिवर्तित करने का संकल्प अभिव्यक्त करती है। **(2)** भारत की एकता और अखंडता के खिलाफ कार्य कर रही अलगाववादी ताकतों के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा उठाए हर कदम का आर्य समाज पूर्ण समर्थन करता है। **(3)** भारत सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाहों का विरोधा करते हुए शपथ पत्र दाखिल किया है। आर्य समाज सरकार के इस कदम का स्वागत एवं समर्थन तो करता ही है साथ में सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष भी रखेगा यह आश्वासन देता है। **(4)** हिंदी भाषा की उन्नति हेतु चिकित्सा की उच्च स्तरीय पढ़ाई का पाठ्यक्रम हिंदी में लागू करने के कदम का आर्य समाज हार्दिक अभिनंदन करता है। उपरोक्त प्रस्ताव उपस्थित आर्य समाज के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित आर्यजनों से खचाखच भरे स्टेडियम में सभी ने ओम ध्वनि के साथ अपनी स्वीकृति और सहमति प्रदान की।

-विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आवश्यक सूचना

टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

अगर आप सही हो तो कुछ
साबित करने की जरूरत नहीं
बस सही रास्ते पर बने रहो,
गवाही खुद वक्त देगा

टंकारा समाचार
अप्रैल 2023
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23
Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-04-2023
R.N.I. No 68339/98
प्रकाशन तिथि: 23.03.2023

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**